

---

dashopaniShadrasahasyam

दशोपनिषद्ग्रन्थम्

Document Information

---

Text title : dashopaniShadrasahasyam

File name : dashopaniShadrasahasyam.itx

Category : upanishhat

Location : doc\_upanishhat

Author : rAmachandrapaNDita

Transliterated by : Pranab Mukherjee pranab9 at gmail.com

Proofread by : Pranab Mukherjee pranab9 at gmail.com

Description-comments : An article by Dr. M. L. Wadekar in Upanishat Sri - Anthology of  
Articles on Upanishads (page 202)

Latest update : December 9, 2017

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

दशोपनिषद्स्यम्



(श्रीमत्सिद्धेश्वरसूनुश्रीमद्रामचन्द्रपण्डितविरचितम्)

From the article by Dr. M. L. Wadekar

१. श्रीरामो लक्ष्मणाय स्वयंरराशरणाथोय अेतद्रुस्यं  
निष्कामैः कर्मभिः स्वैर्भवति शुचिमनो यस्य सोऽन्नाधिकारी ।  
प्राप्य श्रीदैशिकास्याख्युतिशिर-उदितैस्तत्त्वमस्यादिवाम्यैः  
स्वात्मभ्रमैश्च्यबोधं जनिमृतिरहितो मोदते नित्यमुक्तः ।  
(दशावास्योपनिषद्स्यम्)

२. सत्ये मथ्येव भातं यरमथरमतोऽन्तर्बुद्धिश्चाडमेको  
मतोऽन्यत्रास्ति किञ्चिज्जगदपि सवितुर्मण्डले पूरुषोऽडम् ।  
इत्थं यस्य प्रबोधो गुरुवरकरुणापाऽगतस्तस्य तृषणा  
सन्देहो मोडशोकौ भयजननजरामृत्यवौ नैव सन्ति ॥

(केनोपनिषद्स्यम्)

३. स्वान्तःप्राणाक्षिवाणीप्रभृति य विषयाभासकं यस्य योगाद्  
यत्र प्राप्नोति यैतद्भ्रितमविदितं यद्भवन्नात्मरूपम् ।  
इन्द्राद्या देवमुष्या अपि किल न विदुर्यस्य शक्तिं निगूढां  
तद्भुङ्क्ते येन सोऽसौ भवति नरवरोऽनन्तसौभ्यप्रतिष्ठः ॥

(कठवड्युपनिषद्स्यम्)

४. सूक्ष्मात्सूक्ष्मो मडीयान्मडत उत धिया साधनेर्यो न लभ्यो  
बुद्धिस्थो योऽशरीरो रविबुधदडना यस्य भासा विमान्ति ।  
षड्भिर्भावस्वभावै रडित उप सदास्तीतिरुपेण वेध-  
स्तं साक्षाद्भृत्य धीरो गुरुवयनबलाज्जायते नित्यशान्तः ॥

(मुण्डकोपनिषद्स्यम्)

५. जायन्ते विस्कुलिङ्गा अनलत इड यद्भ्रटीमात्सरुपा-

स्तद्रत्सर्वेऽपि भावा भवतु यत उद्विता यान्ति यस्मिन्ल्लयं ते ।  
अप्राणः सर्वविधः प्राणववरधनुः स्वात्मभाणैकलक्ष्य-  
स्तं जानन्नात्मरूपे त्यजति स भवति ब्रह्मरूपो विशोकः ॥

(प्रश्नोपनिषद्स्यम्)

६. प्राणः श्रद्धा भवायुज्वलनजलधरा षण्ड्रियं मानसं च  
भक्तं वीर्यं तपश्चाय सकलनिगमाः कर्मलोकाश्च नाम ।  
यस्माज्जानाताश्च यस्मिन्विलयमुपगताः षोडशैताः कला यः  
सर्वेषां संप्रतिष्ठा भवतु तदधिगमाज्जयते वीतमृत्युः ॥

(माण्डूक्योपनिषद्स्यम्)

७. जाग्रत्स्वप्नः सुषुप्तिस्त्रितयमपि मतेस्तद्व्यपेक्षस्तुरीयः  
सर्वेषां यस्तु साक्षी गुणभवरहितोऽप्यात्तनानामिधानः ।  
भूताद्योऽयिन्यथ ऐकः स सकलजगतः प्रत्यगीशोऽयमात्मा  
ब्रह्मोद्गुराधिगम्यं विदितमिति भवेद्येव स ब्रह्मभूतः ॥

(तैत्तिरीयोपनिषद्स्यम्)

८. स्पृष्ट्वाकाशादिदेहावधिसकलमिदं तत्प्रविश्यान्तरस्थो  
यः सर्वेषामधीशो नियमयति सदानन्दचिद्रूप ऐकः ।  
अन्नादीन्पञ्चकोशान्निजगुडुवयसा संविविख्यात्मभूतं  
तं विद्वान्प्रित्यनुमः किल भयरहितो वर्तते सर्वभूतः ॥

(अैतरेयोपनिषद्स्यम्)

९. यो लोकाँल्लोकपालान्सकलमपि पुरा भोग्यजातं छि तेषां  
स्पृष्ट्वान्तः संप्रविश्य स्थिरयश्चरमपिलं प्रेरयत्यान्तरः सः ।  
दृष्ट्वा नात्रेषदन्यत्सकलजगदधिष्ठानरूपोऽडमेकः  
प्रज्ञानं ब्रह्म येनाधिगतमिति स नावासकामोऽमृतः स्यात् ॥

(छान्दोग्योपनिषद्स्यम्)

१०. मूर्धूपे ज्ञात येतद्दटमुष्मपिलं तज्जमस्यानभिन्नं  
तद्दृष्ट्वादिदृशिकेनानुभवति सततं तत्त्वमस्येवमुक्तः ।  
यस्मादाकाशमुष्यं भवति जगदिदं ब्रह्म तस्याडमस्मी  
त्येतन्मत्तो न भिन्नं स भवति मनुजो ब्रह्म न ब्रह्मवेत्ता ॥

(भृङ्गारण्यकोपनिषद्द्रष्टव्यम्)

११. यस्यानन्तस्य मात्रा विविधसुप्रमिदं येन सर्वेऽपि ज्ञवाः  
प्राणान्त्यव्याकृतं प्राञ्जगद्विदमभिलं व्याकरोन्नामरूपैः ।  
अन्तर्यामी वृषीकाधिप इति विदितं व्यापकं ब्रह्म तत्रा-  
डं ब्रह्मास्मीति वेतैति विलयमसवस्तस्य नैवोच्छलन्ति ॥

(उपसंहारः)

१२. श्रीरामाङ्घ्र्यञ्जलुङ्गो गुरुचरणकुपापाङ्गलव्यैक्यबोधो  
यः श्रीसिद्धेशसूनुर्विरचितममुना रामचन्द्राभिधेन ।  
यच्छ्लोकैः पङ्क्तिसंख्यैरिदमुपनिषदां सद्द्रष्टव्यं दशानां  
ज्ञात्वार्थं संपठेद्योऽनुभवति स सुप्रं सद्गुरोः संप्रसादात् ॥

इति श्रीमद्विद्वन्मुकुटालङ्कारडीरवरश्रीराजयोगिवर्य-  
श्रीसिद्धेश्वरसूनुश्रीरामचन्द्रपण्डितविरचितं  
दशोपनिषद्द्रष्टव्यं समाप्तम् ॥

रामचन्द्र पंडित विरचित छन्दोबद्ध दशोपनिषद्द्रष्टव्य  
- अल्पज्ञात स्वोपज्ञ ग्रन्थ

डो मुकुंद लालजी वाडेकर

From Upanishat Sri - Anthology of Articles on Upanishads, page 202

उपोद्धात - संस्कृत भाषा में अलग-अलग शास्त्रों से सम्बन्धित  
अनेक ग्रन्थ विद्वानों ने लिखे हैं । भारत के हर प्रदेश में से  
शास्त्रों में ग्रन्थ प्रणीत करने वाले पंडितों की परम्परा रही  
है । रामचन्द्र पंडित भी उन्हीं विद्वानों में से एक हैं, जिन्होंने  
न केवल एक ही शास्त्र में, अपितु अनेक शास्त्रों की अपनी विद्वता से  
अनेक शास्त्रों में स्वतन्त्र ग्रन्थों का प्रणयन किया लेकिन उनका यह  
प्रदान आधुनिक संशोधकों के निदर्शन में अभी तक लाया नहीं  
गया है । इसलिखे इस संक्षिप्त शोधपत्र में रामचन्द्र पंडित  
का संस्कृत साहित्य में प्रदान और विशेषतया उनका वेदान्तपरक  
संक्षिप्त ग्रन्थ दशोपनिषद्द्रष्टव्य के बारे में विश्लेषण किया  
गया है । वह अप्रकाशित वेदान्त ग्रन्थ उस्तलिखित ग्रन्थ के रूप  
में ही अभी तक रहा था जिसका अब्यास और सम्पादन करके मैंने  
यह लेख लिखा है ।

रामचन्द्र पंडित का परिचय - कोल्हापुर के सिद्धेश्वर महाराज के रामचन्द्र पंडित सभसे बड़े पुत्र थे । उनकी कुल परम्परा और कुल वृत्तान्त के बारे में काही जानकारी प्राप्त होती है । सिद्धेश्वर महाराज एक प्रथितयज्ञ भगवद्भक्त और साधुपुरुष थे । उनका जन्म चैत्र शुक्ल नवमी शकसंवत् १६६४ याने १७४३ ईसवी सन को हुआ था । उनकी माता का नाम गोदावरी और पिता का नाम रामभट्ट बाबा था । वे माध्यंदिन वाजसनेयी शाखा के थे और उनका गौर कृष्णात्रि था । वेद और अनेक शास्त्रों का उन्होंने अध्ययन किया था । अद्वैतानंद, योगानंद और वैकुण्ठानंद जैसे महान् संतों के सम्पर्क में आने से उनका मन भी अध्यात्म की तरफ रुचि लेने लगा और बाद में दिव्य साधनों के कारण वे भी सिद्ध पुरुष बन गये । उनका जीवन अनेक यमत्कारिक कथाओं से जुड़ा हुआ है ।

ऐसे तेजस्वी महापुरुष के रामचन्द्र पंडित पुत्र थे । उनका जन्म चैत्र कृष्ण नवमी को शक संवत् १८७१ में याने २६ अप्रैल १७६८ को हुआ । उन्होंने परम्परागत पद्धति से व्याकरण, न्याय, धर्मशास्त्र, अलंकारशास्त्र, श्रौतस्मार्त कर्म और मन्त्रशास्त्र का अध्ययन किया था । ऋग्वेद और यजुर्वेद का उनका अध्ययन ग्यारह साल की अल्प आयु में पूरा हुआ । बाद में उन्होंने विशिष्ट पंडितों के पास से व्याकरण, न्याय, श्रौत, मन्त्र, वेदान्त वगैरह शास्त्रों में प्रवीणता प्राप्त की । छन्दःशास्त्र और काव्यनाटकादि का परिशीलन उन्होंने किया ही था । ज्योतिषशास्त्र और संगीतशास्त्र में भी वे पारंगत थे । २३ वर्ष की आयु तक उन्होंने अनेक शास्त्रों और कलाओं में प्रागल्भ्य प्राप्त किया था । विद्वानों की वादसभा में भी अन्य विद्वान् का अपमान किये बिना भुङ्क की विद्वत्ता प्रदर्शित करते थे । जीवन के परिणत काल में उनका जीवन ज्यादातर अध्यात्म की ओर मुका हुआ था । उन्हें कर्म, ज्ञान और उपासना मार्ग में अधिक रुचि होने लगी और भुङ्क विदेही जनक का आदर्श सामने रभ कर जीवन जुने लगे । कोल्हापुर के राजा छत्रपति ने उनका शिष्यत्व स्वीकार किया । राजा ने पूरा राज्य और महाराज यह प्तिताभ भी उनको भेंट किया, लेकिन रामचन्द्र जो को उसमें कोई आसक्ति नहीं थी । उन्होंने वैशाख शुद्ध तृतीया शकसंवत् १७४२ याने २४ अप्रैल १८३० को समाधि ग्रहण की ।

पंडित ज्ञ रामजी के परम भक्त थे । प्रस्तुत दशोपनिषद्द्रष्टव्य  
ग्रन्थ के आरम्भ में उन्होंने श्री राम को प्रणाम करके  
मंगलारम्भ किया है । अन्तिम श्लोक में भी उन्होंने भुद को  
श्रीराम भगवान् के पदकमल का भृंग अर्थात् भ्रमर औसा  
वर्णन किया है । गुरु प्रसाद से भ्रमर के साथ अक्षय का बोध  
हुआ था, औसा अपने बारे में वे बताते हैं । अन्तिम पुष्पिका  
में वे अपना परिचय “विद्वन्भुक्तुटालङ्कारडीरवर” और  
“राजयोगिवर्य” औसा प्रस्तुत करते हैं ।

रामयन्द्र पंडित के ग्रन्थ - रामयन्द्र पंडित ने संस्कृत  
और मराठी भाषा में अनेक विद्वत्तापरिपूर्णा ग्रन्थों की रचना  
की । उनके बहुत से ग्रन्थ अप्रकाशित और अल्पज्ञात रहे हैं ।

१. प्रातिशास्यज्योत्स्ना - वेदलक्षण विषयक यह ग्रन्थ  
वैदिक व्याकरण और वेदपठन की दृष्टि से उपयुक्त है ।

२. भैठ - वैदिक ऋचाओं के संस्मरण के उपयुक्त  
वेदलक्षणविषयक ग्रन्थ ।

३. कुण्डेन्दु - कुण्डलक्षण विषयक यह ग्रन्थ नवग्रहों के  
पीठ वगैरह बनाने की प्रक्रिया के उपयुक्त है ।

लीलावती - यह गणित का ग्रन्थ इसमें सरलता से स्पष्ट  
किया है । क्षेत्र के मापन के उपयुक्त गणित की  
युक्तियाँ इसमें पायी जाती हैं ।

४. वृत्ताभिराम - छन्दःशास्त्र का एक महत्व का ग्रन्थ  
कवियों और साहित्य शास्त्र के विद्वानों के उपयुक्त ।

५. शशावास्थोपनिषद्भाष्य - शशावास्थ उपनिषद् की व्याख्या ।  
वेदान्त का ग्रन्थ ।

६. अधिकरणसंग्रह - भ्रमसूत्र के अधिकरणों पर आधारित  
वेदान्तशास्त्र का छन्दोबद्ध ग्रन्थ ।

७. दशोपनिषद्द्रष्टव्य - स्वोपज्ञवृत्ति के साथ-वेदान्त का  
संक्षिप्त ग्रन्थ । अपनी भुद लिप्पी लुह वृत्ति के साथ ।

८. श्रीरामलीलासदसनाम - वैश्विन्वपूर्णा ढंग से लिप्पा  
हुआ स्तोत्र । राम भगवान् के ज्ञवन और कार्य का विवरण, साथ  
में उनका सदस्र नाम भी पाया जाता है ।

६. राममहिम्नस्तोत्र - शिवमहिम्नस्तोत्र के समान राममहिम्नस्तोत्र ।

१० शयनोत्सव, (११) प्रबोधोत्सव (१२)  
भगवद्गीता - गीत-अभंग - भगवद्गीता के ७०० श्लोकों पर  
विरचित ७०० अभंगों (मराठी अभंग-स्तोत्र) का संग्रह ।  
(१३) अष्टावक्रगीता समश्लोकी (१४) अगणित सुभाषित, आर्या,  
अभंग, पद्य, साकी वगैरह की रचना ।

दशोपनिषद्ग्रन्थस्य - सिद्धेश्वर महाराज की गुरु परम्परा में  
यशवंत महाराज थे । अभी उनके वंशज हैं । उनके व्यक्तिगत  
ग्रन्थ संग्रह में से उनके अनुराग और असीम अनुग्रह के कारण  
मुझे दशोपनिषद्ग्रन्थस्य यह उस्तलिपित ग्रन्थ मिला । रामचन्द्र  
पण्डित, उनका जूवन और वंश परम्परा के बारे में भी उन्होंने  
मुझे अवगत कराया । तेरह पत्र संख्या के देवनागरी सुंदर  
उस्ताक्षर में लिपित यह ग्रन्थ 10.4x30.4 सेंटीमीटर के  
कागज पर उपलब्ध है । मध्य में मूल ग्रन्थ और ऊपर तथा  
नीचे के स्थान में उसकी स्वोपज्ञ व्याख्या दी गई है । ।

शीर्षक के अनुसार यह दस उपनिषदों के रहस्य बताने  
वाला छोटा सा, लेकिन अपूर्व छान्दोबद्ध ग्रन्थ है । हर एक  
उपनिषद् का रहस्य एक स्तंभरा छन्द में विरचित श्लोक  
में प्रस्तुत किया गया है । ये श्लोक कवि ने ऋद्ध अथित किये  
हैं । कुल बारह श्लोक हैं । पहला श्लोक उपोद्घात स्वरूप और  
मंगलारम्भ का है । अन्तिम श्लोक में कवि ने अपने बारे में और  
१० ग्रन्थ के बारे में बताया है । दूसरे श्लोक से ग्यारहवें  
श्लोक तक १० श्लोकों में दस उपनिषदों का रहस्यमय और  
गूढ संदेश प्रस्तुत किया है । वे दस उपनिषद् हैं -

१ शकटेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः ।

२ अतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥

३ १० ग्रन्थ में मुण्डक पहले और बाद में प्रश्न लिया है, यह  
परिवर्तन है । १० ग्रन्थ की और एक विशेषता यह है कि लेखक  
ने ऋद्ध हर एक श्लोक की वृत्ति लिपी है, जिसमें उन्होंने हर  
एक श्लोक को समझाने के लिये हर एक उपनिषद् के मूल अवतरणों को

उद्धृत करके विषय को सरल किया है । वृत्ति में उपनिषदों के  
अतिरिक्त, भगवद्गीता, श्रीराम गीता, शांकरभाष्य, अपरोक्षानुभूति,  
भागवत, रामहृदय वगैरह ग्रन्थों से उद्धरण लिये हैं ।  
शांकर सिद्धान्त के प्रति उनका आदरभाव स्पष्ट है ।


इस प्रकार इस उपनिषदों के सारभूत रहस्य को छन्दोबद्ध  
ग्रन्थ में कवि ने प्रस्तुत किया है । विद्वानों के परिशीलन के  
लिखे मूल श्लोकों का पाठ इस लेख के साथ दिया है ।

Encoded and proofread by Pranab Mukherjee pranab9 at gmail.com

---

——  
*dashopaniShadrahasyam*

pdf was typeset on December 22, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

